# 90 नमाज़े पयम्बर

## तकबीरे तहरीमा से सलाम तक

0

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहम वाला है।

सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफ़ी चाहते हैं।

अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल0 पर, आपकी आल व औलाद और असहाब रजि. पर। व बअद।

नमाज़ इस्लाम के पाँच बुनियादी अरकान में से एक अहम रूक्न हैं यह अमल भी है और अक़ीदा भी। मोमिन की पहचान भी है और मेअराज भी। नमाज़ में सिर्फ़ ज़बान ही नहीं बल्कि दिल भी अल्लाह की बारगाह में तअज़ीम व मोहब्बत, ख़ौफ़ और उम्मीद के आदाब बजा लाता है। बेशक! नमाज़ एक मुकम्मल इबादत है जो बदनी, क़ौली और दिली इबादात का हसीन मजमूआ है। जो शख़्स नमाज़ पढ़ता है और उसकी अदायगी में कोताही नहीं करता वह अज्र व सवाब का मुस्तहिक़ होता हैं नमाज़ के अज्र व सवाब में कमी बेशी का मअयार यह है कि जिस क़दर किसी शख़्स (मर्द हो या औरत) की नमाज़ नबी सल्ल. की बतलाई सिखलाई नमाज़ के ज़्यादा करीब होगी, वह उतना ही ज़्यादा सवाब हासिल करेगा और जिस किसी की नमाज़ आप सल्ल. की सिखलाई नमाज़ से अलग होगी, वह उतना ही कम सवाब पाएगा। जैसा कि आप सल्ल. का इर्शाद है —"बेशक बन्दा नमाज़ अदा करता है लेकिन उसे नामा ए आमाल में उस (नमाज़) का दसवां, नौवां , आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथा तीसरा या आधा हिस्सा लिखा जाता है।" (अबु दाऊद – 796, इब्ने हिब्बान – 521)

(इसीलिए) आप सल्ल. ने फरमाया "तुम नमाज़ उस तरह पढ़ो जिस तरह मुझे नमाज़ अदा करते देखते हो।" (बुख़ारी – 631, अहमद – 20804, दारेकुत्नी –1295)

तो आइये! अहादीसे रसूल सल्ल. के ज़रिये जानते हैं कि आप सल्ल. की नमाज़ कैसी थी ?

(1) अल्लाह के रसूल सल्ल. जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो क़िब्ले (ख़ाना ए काबा) की तरफ़ मुंह करके रफ़ायदैन करते (यानि हाथों को उठाते) और "अल्लाहु अकबर" कहते। (मुस्लिम–862, इब्ने माजा– 803) और फरमाया "जब तुम नमाज़ के लिए खड़े होओ तो तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहो।" (बुख़ारी– 757, मुस्लिम–868)

(मुरव्वजा ज़बानी नीयत आप सल्ल. से साबित नहीं है।)

(2) आप सल्ल. अपने दोनों हाथ कंधो तक उठाते थे। (बुख़ारी – 736, मुस्लिम–861) (कभी) आप सल्ल. अपने दोनो हाथ कानों तक उठाते थे। (मुस्लिम– 865, अबु दाऊद–745, नसाई–882)

(हाथ कन्धों तक उठाएं या कानों तक दोनो तरह जाइज़ व साबित है। लेकिन हाथ उठाते वक़्त कानों को पकड़ने या छूने की कोई दलील नहीं है। इसी तरह मर्दों का हमेशा कानों तक व औरतों का कन्धों तक हाथ उठाना भी किसी हदीस से साबित नहीं है।)

(3) आप सल्ल. उगंलियाँ फैला कर हाथों को उठाते थे। (अबु दाऊद–753, इब्ने खुज़ैमा– 459)

(4) आप सल्ल. अपना दायां हाथ अपने बाएं हाथ पर सीने पर रखते थे। (अहमद–22313, इब्ने खुज़ैमा – 479)

लोगों को यह हुक्म था कि नमाज़ में दायां हाथ बाऐं ज़िराअ' पर रखें। (बुख़ारी–740, मोत्ता मालिक – 377)

('जिराअ' कोहनी के सिरे से बीच की उंगली के सिरे तक होता है) कभी आप सल्ल. ने अपना दायां हाथ अपनी बाई हथेली, कलाई और 'साअद' पर

रखा। (अबु दाऊद– 727, इब्ने खुज़ैमा– 480)

(कोहनी से हथेली तक का हिस्सा 'साअद'' कहलाता है।)

(5) आप सल्ल. तकबीरे तहरीमा और क़िराअत के बीच यह दुआ पढ़ा करते थे – '' अल्लाहुमा बाइद बयनी व बयना ख़तायाया कमा बाअत्ता बयनल मशरिक़ि वल मग़रिब। अल्लाहुम्मा नक़्क़िनी मिनल ख़ताया कमा युनक़्क़स सौबुल अब्यदु मिनद दनसि। अल्लाहुम्मग़सिल ख़तायाया बिल माअि वस्सलजि वल बरदि'' (बुख़ारी – 744, मुस्लिम– ............)

(कभी) आप सल्ल. यह दुआ पढ़ते थे – ''सुब्हाना कल्ला हुम्मा वबि हम्दिका व तबारा कसमुका व तआला जद्दुका व ला इलाहा ग़ैरूक'' (अबु दाऊद–775, इब्ने माजा–804)

(6) फिर आप सल्ल. ––आऊजु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम'' पढ़ते। (मुसनफ़ अब्दुर्रज़ाक – 2589, हसन)

(कभी) आप सल्ल. ''आऊज़ुबिल्लाहिस्समीइल अलीम। मिनश्शैतानिर्रजीम'' पढ़ते। (अबु दाऊद–775, इब्ने माजा–804)

(7) फिर आप सल्ल. '' बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' पढ़ते। (नसाई–907,908, इब्ने खुज़ैमा–499)

(इसका ज़हर (ऊंची आवाज) से पढ़ना भी साबित है। (नसाई –908) और सिर्रन (दिल में) भी। (नसाई–909, इब्ने खुज़ैमा–495)

(8) फिर आप सल्ल. सूरह फातिहा यानि 'अल्हम्दु शरीफ़' पढ़ते। (नसाई–905, 906)

आप सल्ल. सूरह 'फातिहा' पढ़ते हुए हर आयत पर वक़्फ़ा करते (ठहरते) थे। (अबु दाऊद–4001, अहमद–27003)

आप सल्ल. ने फ़रमाया ''जो शख़्स सूरह फातिहा नहीं पढ़ता, उसकी नमाज़ नहीं होती।'' (बुख़ारी – 756, अहमद – 20876, नसाई–913)

और यह कि ''हर वह नमाज़ जिसमें सूरह फ़ातिहा न पढ़ी जाए (वह) नाक़िस है, नाक़िस है।'' (पूरी नहीं) (इब्ने माजा– 841, इब्ने खुज़ैमा – 489)

(9) फिर आप सल्ल. 'आमीन' कहते थे। (नसाई – 932, इब्ने माजा–854)

जब आप सल्ल. ने (नमाज़ में) 'वलद दवाल्लीन' जहर से कही तो आमीन भी जहरन (ऊंची आवाज़ से) कही। (अबु दाऊद–933)

(कभी) आप सल्ल. ने 'आमीन' के साथ अपनी आवाज़ पस्त रखी। (अहमद–19048)

(सिर्री नमाज़ों (जुहर व असर) में आमीन सिर्रन कहने पर मुसलमानों का इज्माअ है।)

(10) फिर आप सल्ल. कोई 'सूरह' (सूरत) पढ़ने से पहले 'बिस्मिल्लाहिर्रहमार्निहीम' पढ़ते थे। (मुस्लिम – 894)

(एक दफ़ा मुआविया रजि. ने नमाज़ में सूरह फातिहा के बाद (कोई) सूरत पढ़ने से पहले 'बिस्मिल्लाह' नहीं पढ़ी तो अन्सार व मुहाजिरीन रजि. सख़्त नाराज़ हुए। उसके बाद मुआविया रज़ि इसे पढ़ने लगे। (अल उम जिल्द। सफ़ा–108)

(11) आप सल्ल. ने फरमाया ''सूरह फातिहा पढ़ो और (कुरआन से) जो अल्लाह चाहे पढ़ो।'' (अबु दाऊद–859, इब्ने खुजैमा –638)

(12) फिर आप सल्ल. रूकूअ के लिए तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहते। (बुख़ारी–789, मुस्लिम–867) और अपने दोनों हाथ कन्धों तक उठाते। (बुख़ारी –738, मुस्लिम –861)

(13) आप सल्ल. रूकूअ में जाते और रूकुअ से सर उठाते वक्त रफ़ायदैन करते और तकबीर कहते। (मुस्लिम–862, बुखारी–735)

(14) आप सल्ल. जब रूकुअ करते तो अपने हाथों से अपने घुटने मज़बूती से पकड़ते और कमर झुकाते। (बुख़ारी – 828)

आप सल्ल. का सर न तो पीठ से ऊंचा होता और न नीचा। (बल्कि बराबर रहता था।) (अबु दाऊद–730, इब्ने माजा–1061)

(15) आप सल्ल. रूकूअ में "सुब्हान रब्बियल अज़ीम" पढ़ते थे। (मुस्लिम–1074, दारे कुत्नी–1277)

आप सल्ल. ने हुक्म दिया कि इन कलमात को रूकूअ में पढ़ा जाए। (अबु दाऊद–869, इब्ने माजा–887)

रूकूअ में आप सल्ल. से इन दुआओं का पढ़ना भी साबित है –

(क) "सुब्हान कल्ला हुम्मा रब्बना व बि हम्दिका, अल्ला हुम्मग़ फ़िरली" (बुख़ारी–794, मुस्लिम–1085)

(ख) "सुब्बुहुन कुद्दुसुन रब्बुल मलॉइकति वर्रूह" (मुस्लिम –1091, अबु दाऊ–872, नसाई –1051)

(ग) "सुब्हानका वबि हम्दिका ला इलाहा इल्ला अन्ता" (मुस्लिम – 1088, नसाई–. ...)

(16) आप सल्ल. जब रूकूअ से सर उठाते तो 'रफ़ायदैन' करते और 'समिअल्लाहुलिमन हमिदा रब्बना वलकल हम्द" कहते थे। (बुख़ारी –735, नसाई –1064)

"रब्बना लकल हम्द" कहना भी सही है। (बुख़ारी – 789)

इनके अलावा यह दुआऐं भी आप सल्ल. से साबित हैं –

(क) "अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द" (बुख़ारी–796)

(ख) "अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द। मिलअस्समावाति व मिल अल अर्दि व मिल अमा शिअता मिन शैइन बअद" (मुस्लिम–1068, नसाई 1070)

(ग) "अहलस्सनाई वल म जदि, ला मानिआ लिमा आतयता वला मुअतिया लिमा मनअता वला यन्फ़ॅऊ ज़ल जद्दिमिनकल जद्दु" (मुस्लिम–1071, अबु दाऊद–847, नसाई – 1071)

(घ) "रब्बना वलकल हम्द। हमदन कसीरन , तय्यिबन मुबारकन फ़ीह" (बुख़ारी – 799)

(17) रूकूअ के बाद खड़े होकर हाथ बांधना चाहिये या छोड़ना। इस बारे में साफ साफ कुछ साबित नही है। इमाम अहमद रह0 से इस बारे में जब सवाल किया गया तो उन्होंने फ़रमाया – "इन्शाअल्लाह इसमें कोई तंगी नहीं है।" (यानि दोनों तरह कर सकते हैं) (मसाइल अहमद–रिवाया सालेह, सफ़ा –615)

(18) फिर आप सल्ल. तकबीर कहकर (या कहते हुए) सज्दे के लिए झुकते। (बुख़ारी –803, मुस्लिम–868)

(19) आप सल्ल. फ़रमाते "जब तुम में से कोई सज्दा करे तो ऊंट की तरह न बैठे। बल्कि अपने दोनों हाथ अपने घुटनों से पहले ज़मीन पर रखे।" (अबु दाऊद–840 , नसाई–1094)

इब्ने उमर रज़ि घुटनों से पहले अपने दोनों हाथ ज़मीन पर रखते थे। (बुख़ारी–803) और कहते कि आप सल्ल. भी ऐसा ही किया करते थे। (इब्ने खुजैमा–627)

(जिस रिवायत में सज्दे में जाते वक़्त पहले घुटने फिर हाथ रखने का ज़िक्र है (अबु दाऊद–838) शरीक बिन अब्दुल्लाह की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है और उसके शवाहिद भी ज़ईफ़ हैं।)

(20) आप सल्ल. सज्दे में नाक व पैशानी ज़मीन पर जमा कर रखते। अपने हाथों को अपनी बग़लों से दूर करते और हथेलियां कन्धों के बराबर (ज़मीन पर रखते थे। (अबु दाऊद–734, इब्ने माजा–863, इब्ने खुजैमा–589)

(कभी) आप सल्ल. सज्दे में अपनी दोनों हथेलियों को अपने कानों के बराबर रखते। (अबु दाऊद–726, नसाई–1105)

(21) आप सल्ल. सज्दे में अपने दोनों बाज़ूओं को अपनी बग़लों से हटाकर रखते थे। (अबु दाऊद–730, इब्ने माजा–1061)

(22) आप सल्ल. सज्दे में अपने (दोनों) हाथ (ज़मीन पर) रखते। न तो उन्हें बिछाते और न समेटते। अपने पांव की उंगलियों को क़िब्ला रूख़ रखते। (बुख़ारी–828)

आप सल्ल. ने फ़रमाया "सज्दे में एतेदाल करो। कुत्ते की तरह हाथ न बिछाओ।" (बुख़ारी–822, मुस्लिम–1102)

(23) आप सल्ल. ने फ़रमाया "मुझे सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है– पैशानी व नाक, दोनो हाथ, दोनों घुटने और दोनो पैरों के पन्जे।" (बुख़ारी–812, मुस्लिम– 1098)

और यह कि " जब बन्दा सज्दा करता हे तो सात अअज़ा (अंग) उसके साथ सज्दा करते हैं – चेहरा, हथेलियां, दोनो घुटने और दोनो पांव।" (मुस्लिम–1099)

यह भी कि "जो शख़्स (नमाज़ में) अपनी नाक ज़मीन पर (पैशानी के साथ) न रखे, उसकी नमाज़ नहीं होती।" (दारे कुत्नी–1303, हसन)

(24) आप सल्ल. जब सज्दा करते तो अगर बकरी का बच्चा आपकी बग़ल के नीचे से गुज़रना चाहता तो गुज़र सकता था।" (मुस्लिम 1107, अबु दाऊद–898, इब्ने माजा–880)

(यानि आप सल्ल. अपने सीने व पेट को ज़मीन से ऊंचा रखते थे)

(25) "सज्दे में बन्दा अपने रब से बहुत करीब होता है। लिहाज़ा सज्दे में खूब दुआएं करो।" (मुस्लिम–1083, नसाई–1140)

आप सल्ल. से सज्दे में इन दुआओं का पढ़ना साबित है –

(क) "सुब्हाना रब्बियल अअला" (नसाई–1049, दारे कुत्नी–1277, इब्ने खुजैमा–668)

(ख) सुब्हानका अल्ला हुम्मा रब्बना वबिहम्दिका अल्लाहुम्मग़ फ़िरली" (बुख़ारी–794, मुस्लिम–1085)

(ग) "सुब्बुहुन कुद्दुसन रब्बुल मलॉइकति वर्रूह" (मुस्लिम–1091, अबु दाऊद–872, नसाई –1137)

(घ) "सुब्हान का वबि हम्दिका ला इलाहा इल्ला अन्ता" (मुस्लिम–1089, नसाई–1034)

(च) सुब्हान का वबि हम्दि का अस्तग़फिरूका व अतूबू इलैक" (मुस्लिम–1079, नसाई – 1043)

(26) आप सल्ल. सज्दे को जाते वक़्त रफ़ादयैन नहीं करते थे।" (बुख़ारी–738)

(27) आप सल्ल. सज्दे में अपने दोनों पांव खड़े रखते थे। (मुस्लिम–1098)

(28) आप सल्ल. 'अल्लाहु अकबर' कह कर सज्दे से सर उठाते और अपना बायां पांव बिछा कर उस पर बैठ जाते। (अबु दाऊ–730, इब्ने माजा–1061, इब्ने खुजैमा–588)

(29) आप सल्ल. सज्दे से सर उठाते वक्त रफ़ायदैन नहीं करते थे। (बुख़ारी–738, मुस्लिम–861)

(30) आप सल्ल. सज्दे से सर उठा कर (जलसे में) थोड़ी देर बैठ रहते। (बुख़ारी–818, दारे कुत्नी' 1294)

हत्ता कि लोग यह समझते कि आप सल्ल. भूल गए हैं। (बुख़ारी–821)

(31) आप सल्ल. जलसे (दोनों सज्दों के बीच ) में यह दुआएं पढ़ते – "रब्बिग़ फ़िरली, रब्बिग़ फ़िरली" (अबु दाऊद –874, नसाई – 1148)

"अल्लाहुम्मग़ फिरली वरहमनी वहदिनी व आफ़िनी वर ज़ुक़्नी" (मुस्लिम–6850, अबु दाऊद–850, इब्ने माजा– 898)

(32) फिर आप सल्ल. 'अल्लाहु अकबर' कह कर दूसरा सज्दा करते। (बुख़ारी– 789)

आप सलल. सज्दे में जाते वक़्त रफ़ायदैन नहीं करते थे। (बुख़ारी–738, मुस्लिम– 862)

फिर आप सल्ल. तकबीर कह कर (दूसरे) सज्दे से सर उठाते। (बुख़ारी – 789, मुस्लिम– 868)

(33) सज्दे से उठते वक़्त आप सल्ल. रफायदैन नहीं करते थे। (मुस्लिम–862, बुख़ारी – 738)

(34) आप सल्ल. जब ताक़ (पहली या तीसरी) रकअत में सज्दे से सर उठाते तो बैठ जाते। (बुख़ारी– 823)

हत्ता कि हर हड्डी अपनी जगह पर आ जाती। (अबु दाऊद – 730)

(एक रकअत पूरी हुई। अगर आप एक वितर पढ़ रहे हैं तो तश्हुद, दुरूदे इब्राहीमी

और दुआएं (जिनका ज़िक्र आगे आ रहा है) पढ़ कर सलाम फैर लें।) (इब्ने माजा– 1061, इब्ने खुजैमा – 487)

(35) फिर आप सल्ल. ज़मीन पर दोनों हाथ टेक कर दूसरी रकअत के लिए उठ खड़े होते। (बुख़ारी – 824, इब्ने खुजैमा–687)

(36) आप सल्ल. दूसरी रकअत में "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन" से किराअत शुरू करते। (मुस्लिम– 110, इब्ने खुजैमा–1603)

आप सल्ल. 'अलहम्दु' पढ़ने से पहले 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ते थे। (इब्ने खुजैमा –499, नसाई –907)

(37) दूसरी रकअत में दूसरे सज्दे के बाद (तश्हुद के लिए) बैठकर अपना दायां हाथ दांई रान पर और बायां हाथ बाई रान पर रखते। (अबु दाऊद – 957,इब्ने माजा – 867)

(कभी) आप सल्ल. अपना दायां हाथ दाएं घुटने पर और बायां हाथ बाएं घुटने पर रखते थे। (मुस्लिम – 1309, इब्ने माजा – 913, नसाई – 1164)

(38) फिर आप सल्ल. अपने दाएं हाथ की उगंलियों से हलक़ा बनाते और शहादत की उंगली से इशारा करते। (नसाई – 1164, मुस्लिम – 1310, इब्ने माजा–913)

(39) आप सल्ल. शहादत की उंगली को थोड़ा सा झुका देते। (अबु दाऊद –991, इब्ने खुजैमा–716)

और उंगली को हरकत देते रहते थे। (इब्ने माज– 911, अबु दाऊद–991, इब्ने खुजैमा – 714)

(40) आप सल्ल. शहादत की उंगली को क़िब्ला रूख़ करते और उसकी तरफ़ देखते रहते थे। (इब्ने खुजैमा – 719, नसाई – 1163)

आप सल्ल. (दो, तीन व चार रकअत वाले) हर तश्हुद में शहादत की उंगली से इशारा करते थे। (नसाई –1164)

(ला इलाहा पर उंगली को उठाना और इल्ललललाह पर गिरा देना किसी हदीस से साबित नहीं है।)

(41) आप सल्ल. तश्हुद में "अत्तहियात" (पूरी) पढ़ते। (बुख़ारी – 835, मुस्लिम–897, इब्ने माजा – 899)

(42) फिर आप सल्ल. 'दुरूदे इब्राहीमी' पढ़ते थे। (बुख़ारी –3370, मुस्लिम–907, नसाई – 1289)

(43) दो रकअतें पूरी हुई। अगर आप दो रकअतों वाली नमाज़ पढ़ रहे हैं तो अब दुआ पढ़ कर दोनों तरफ़ सलाम फैर दें और अगर तीन या चार रकअत वाली नमाज़ है तो 'तकबीर' कह कर खड़े हो जाऐं। (अहमद–4382, 907)

(पहले तश्हुद में भी 'दुरूद' पढ़ना बेहतर है। अगर सिर्फ 'अत्तहियात' पढ़ कर खड़ा हो जाए तो भी जाइज़ है।)

(44) आप सल्ल. दो रकअतें पढ़ कर उठते तो 'तकबीर' कहते और 'रफ़ायदैन' करते। (बुख़ारी – 789, 739, अहमद – 730)

(45) अगर नमाज़ तीन रकअतों वाली है तो तीसरी रकअत पूरी करने के बाद तश्हुद, दुरूद व दुआऐं पढ़कर सलाम फैर दें। (बुख़ारी – 1092)

(46) अगर नमाज़ चार रकअतों वाली होती तो दूसरा सज्दा करने के बाद थोड़ी देर बैठ कर खड़े होते। (बुख़ारी – 823)

(47) चौथी रकअत भी तीसरी रकअत की तरह पढ़ते और आख़िरी तश्हुद में 'तौरक' करते। (बुख़ारी – 828)

('तौरक़' का मतलब है नमाज़ी का दाएं कूल्हे को दांए पैर पर इस तरह रखना की वह खड़ा हो व उंगलियों का रूख़ क़िब्ले की तरफ़ हो। बाएं कूल्हे को ज़मीन पर टेकना और बाएं पैर को फैलाकर कर दाई तरफ निकालना।) ( अल क़ामूस)

(48) चौथी रकअत पूरी करने के बाद "अत्तहियात" (बुख़ारी – 1202) व 'दुरूदे इब्राहीमी' पढ़ें। (बुखारी – 3370)

(49) फिर जो दुआ चाहें (अरबी ज़बान में ) पढ़ें। (बुख़ारी – 835)

दुरूद के बाद पढ़ी जाने वली कुछ दुआएं –

(क) "अल्ला हुम्मा इन्नी आऊज़ुबिका मिन अज़ाबिल क़ब्रि व मिन अज़ाबिन्नार। व मिन फ़ित्नति महया वल ममाति वमिन फ़ित्नति मसीहि दज्जाल" (बुख़ारी– 1377, मुस्लिम– 1324)

(ख) "अल्ला हुम्मा इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरवं वला यग़फिरूज़्ज़ुनुबा इल्ला अन्ता फ़ग़फ़िरली मग़फ़िरतवं मिन इन्दिक। वर हम्नी इन्नका अन्तल ग़फ़ूर्रुरहीम।" (बुख़ारी– 834, मुस्लिम – 6869, इब्ने माजा – 3835)

(ग) "रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतंव वफ़िल आख़िरति हसनतंव क फ़िना अज़ाबन्नार" (बुख़ारी – 4522, मुस्लिम– 6840)

(घ)"अल्लाहुम्मग़ फ़िरली मा क़द्दम्तु वमा अख़्ख़रतु वमा असर्रतु वमा अअलन्तु वमा असरफ़्तु वमा अन्ता अअलमु बिहीमिननी। अन्तल मुक़द्दिमु व अन्तल मुअख़्ख़िरू ला इलाहा इल्ला अन्ता।" (अबु दाऊद – 1509, अहमद– 7900)

(50 दुआ के बाद आप सल्ल. दाईं व बाईं तरफ़ सलाम फैरते और फ़रमाते "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह।" (मुस्लिम – 970, अबु दाऊद–997, इब्ने माजा– 915, दारे कुत्नी – 1331)

अगर इमाम के साथ नमाज़ पढ़े तो जब इमाम सलाम फैर दे तो सलाम फैरें। (बुख़ारी– 838)

(अल्हम्दुलिल्लाह! नमाज़ पूरी हुई। आप सल्ल. का बतलाया सिखलाया। यह तरीक़ा ए नमाज़ औरतों मर्दों सबके लिए यकसा है।)

नमाज़ के बाद अज़्कार

(1) आप सल्ल. सलाम फैरने के बाद बुलन्द आवाज़ से "अल्लाहु अकबर" कहते। (बुख़ारी – 842, मुस्लिम– 1316)

(2) फिर तीन दफ़ा 'अस्तग़फिरूल्लाह' कह कर 'अल्लाहुम्मा अन्तस्सलाम व मिन्कस्सलाम तबारकता या ज़ल जलालि वल इकराम" पढ़ते। (मुस्लिम – 1334, अबु दाऊद – 1513)

(3) "ला इलाहा इल्लल लाहु वहदहु ला शरीका लहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर। अल्ला हुम्मा ला मानिआलिमा आतयता वला मुअतियालिमा मनअता वला यनफ़ऊ ज़ल जद्दि मिन कल जद्दु " पढ़ते। (बुख़ारी–844, मुस्लिम – 1338)

(4) "अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुस्नि इबादतिका" (अबु दाऊद – 1522, नसाई – 1304)

(5) आप सल्ल. ने फरमाया " जो शख़्स 33 दफ़ा सुब्हानल्लाह, 33 दफ़ा अल्हम्दुलिल्लाह, 33 दफ़ा अल्लाहु अकबर और एक दफ़ा ला इलाहा इल्लल लाहु वहदहु ला शरीका लहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्द। व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर।" पढ़े तो उसके सारे गुनाह माफ़ कर दिये जाऐगें। (मुस्लिम – 1352)

(6) 33 दफ़ा सुब्हानल्लाह, 33 दफ़ा अल्हम्दुलिल्लाह और 34 दफ़ा अल्लाहु अकबर कहना भी सही है। (मुस्लिम –1349)

(7) आप सल्ल. ने चारों कुल (मऊज़ात) पढ़ने की भी हिदायत की। (अबु दाऊद – 1523, इब्ने खुजैमा– 755, नसाई– 1339)

इनके अलावा जो दुआऐं कुरआन व हदीस से साबित हैं, उन्हें भी पढ़ा जा सकता है।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। हमारी ख़ताओं व गुनाहों को माफ़ करे और आप सल्ल. ने जेसे नमाज़ पढ़ी, सिखलाई या पढ़ने का हुक्म दिया, वैसी नमाज़ पढ़ने की हमें तौफ़ीक़ दे।

आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9214836639, 9887239649



nove this message.